श्री क्षमावाणी पूजन

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

स्वर : पंडित सुनीलजी शास्त्री, राजकोट

रचयिता : कविवर राजमलजी पवैया

स्वर : सुश्री काव्या जैन, राजकोट

स्थापना

(ताटंक)

क्षमावाणी का पर्व सुपावन देता जीवों को संदेश।
उत्तम क्षमाधर्म को धारो जो अतिभव्य जीव का वेश।।
मोह नींद से जागो चेतन अब त्यागो मिथ्याभिनिवेश।
द्रव्यदृष्टि बन निजस्वभाव से चलो शीघ्र सिद्धों के देश।।
क्षमा, मार्दव, आर्जव, संयम, शौच, सत्य को अपनाओ।
त्याग, तपस्या, आकिंचन, व्रत ब्रह्मचर्य हो जाओ।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

स्थापना

(ताटंक)

एक धर्म का सार यही है समतामय ही बन जाओ।
सब जीवों पर क्षमाभाव रख स्वयं क्षमामय हो जाओ।।
क्षमा धर्म की महिमा अनुपम क्षमा दर्म ही जग में सार।
तीन लोक में गूँज रही है क्षमावाणी की जयजयकार।।
ज्ञाता-दृष्टा हो समग्र को देखो उत्तम निर्मल भेष।
रागों से विरक्त हो जाओ रहे न दुख का किंचित् लेश।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

स्थापना

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमा धर्म !
अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमा धर्म !
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमा धर्म !
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जल

जीवादिक नव तत्त्वों का श्रद्धान यही सम्यक्त्व प्रथम।
इनका ज्ञान ज्ञान है, रागादिक का त्याग चरित्र परम।।
'संते पुव्वणिबद्धं जाणदि'[1] वह अबंध का ज्ञाता है।
सम्यग्दृष्टि सुजीव आस्रव-बंधरहित हो जाता है।।
उत्तम क्षमा धर्म उर धारूँ जन्म-मरण क्षय कर मानूँ।
परद्रव्यों से दृष्टि हटाऊँ निजस्वभाव को पहचानूँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्माय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

1. (सम्यग्दृष्टि) जीव सत्ता में मौजूद पूर्वबद्ध कर्मों को जानता है।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

चंदन

सप्त भयों से रहित निशंकित निजस्वभाव में सम्यग्दृष्टि।
मिथ्यात्वादिक भावों में जो रहता वह है मिथ्यादृष्टि।।
तीन मूढ़ता छह अनायतन तीन शल्य का नाम नहीं।
आठ दोष समकित के अरु आठों मद का कुछ काम नहीं।।
उत्तम क्षमा धर्म उर धारूँ जन्म मरण क्षय कर मानूँ।
परद्रव्यों से दृष्टि हटाऊँ निज स्वरूप को पहचानूँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्माय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

अक्षत

अशुभ कर्म जाना कुशील शुभ को सुशील है मानत रे।
जो संसार बंध का कारण वह कुशील न जानत रे।।
कर्म फलों के प्रति जिनकी आकांक्षा उर में रही नहीं।
वह निकांक्षित सम्यग्दृष्टि भव की वांछा रही नहीं।।
उत्तम क्षमा धर्म उर धारूँ जन्म मरण क्षय कर मानूँ।
परद्रव्यों से दृष्टि हटाऊँ निज स्वरूप को पहचानूँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्माय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

पुष्प

राग शुभाशुभ दोनों ही संसार-भ्रमण का कारण है।
शुद्धभाव ही एकमात्र परमार्थ भवोदधि तारण है।।
वस्तु स्वभाव धर्म के प्रति जो लेश जुगुप्सा करे नहीं।
निर्विचिकित्सक जीव वही है निश्चय सम्यग्दृष्टि वही।।
उत्तम क्षमा धर्म उर धारूँ जन्म मरण क्षय कर मानूँ।
परद्रव्यों से दृष्टि हटाऊँ निज स्वरूप को पहचानूँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्माय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

नैवेद्य

शुद्ध आत्मा जो ध्याता वह पूर्ण शुद्धता पाता है।
जो अशुद्ध को ध्याता है वह ही अशुद्धता पाता है।।
परभावों में जो न मूढ़ है दृष्टि यथार्थ सदा जिसकी।
वह अमूढ़दृष्टि का धारी सम्यग्दृष्टि सदा उसकी।।
उत्तम क्षमा धर्म उर धारूँ जन्म मरण क्षय कर मानूँ।
परद्रव्यों से दृष्टि हटाऊँ निज स्वरूप को पहचानूँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्माय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

दीप

राग-द्वेष मोहादिक आस्रव ज्ञानी को होते न कभी।
ज्ञाता-दृष्टा को ही होते उत्तम संवर भाव सभी।।
शुद्धातम की भक्ति सहित जो परभावों से नहीं जुड़ा।
उपगूहन का अधिकारी है सम्यग्दृष्टि महान बड़ा।।
उत्तम क्षमा धर्म उर धारूँ जन्म मरण क्षय कर मानूँ।
परद्रव्यों से दृष्टि हटाऊँ निज स्वरूप को पहचानूँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्माय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

धूप

कर्म बन्ध के चारों कारण मिथ्या अविरति योग कषाय।
चेतयिता इनका छेदन कर, करता है निर्वाण उपाय।।
जो उन्मार्ग छोड़कर निज को निज में सुस्थापित करता।
स्थितिकरण युक्त होता वह सम्यग्दृष्टि स्वहित करता।।
उत्तम क्षमा धर्म उर धारूँ जन्म मरण क्षय कर मानूँ।
परद्रव्यों से दृष्टि हटाऊँ निज स्वरूप को पहचानूँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्माय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

फल

पुण्य-पापमय सभी शुभाशुभ योगों से रहता वह दूर।
सर्व संग से रहित हुआ वह दर्शन-ज्ञानमयी सुख पूर।।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरितधारी के प्रति गौ वत्सलभाव।
वात्सल्य का धारी सम्यग्दृष्टि मिटाता पूर्ण विभाव।।
उत्तम क्षमा धर्म उर धारूँ जन्म मरण क्षय कर मानूँ।
परद्रव्यों से दृष्टि हटाऊँ निज स्वरूप को पहचानूँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्माय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

अर्घ्य

ज्ञानविहीन कभी भी पलभर ज्ञानस्वरूप नहीं होता।
बिना ज्ञान के ग्रहण किए कर्मों से मुक्त नहीं होता।।
विद्यारूपी रथ पर चढ़ जो ज्ञानरूप रथ चलवाता।
वह जिन-शासन की प्रभावना करता शिवपथ दर्शाता।।
उत्तम क्षमा धर्म उर धारूँ जन्म मरण क्षय कर मानूँ।
परद्रव्यों से दृष्टि हटाऊँ निज स्वरूप को पहचानूँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्माय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जयमाला

(दोहा)

उत्तम क्षमा स्वधर्म को, वन्दन करूँ त्रिकाल।
नाश दोष पच्चीस कर, काटूँ भव जंजाल।।

(ताटंक)

सोलहकारण पुष्पांजलि दशलक्षण रत्नत्रय व्रत पूर्ण।
इनके सम्यक् पालन से हो जाते हैं वसुकर्म विचूर्ण।।

भाद्र मास में सोलहकारण तीस दिवस तक होते हैं।
शुक्ल पक्ष में दशलक्षण पंचम से दस दिन होते हैं।।
पुष्पांजलि दिन पाँच पंचमी से नवमी तक होते हैं।
पावन रत्नत्रयव्रत अन्तिम तीन दिवस के होते हैं।
आश्विन कृष्णा एकम् उत्सव क्षमावाणि का होता है।
उत्तमक्षमा धार उर श्रावक मोक्षमार्ग को जोता है।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

भाद्र मास अरु माघ मास अरु चैत्र मास में आते हैं।
तीन बार आ पर्वराज जिनवर संदेश सुनाते हैं।।
'जीवे कम्मं बद्धं पुट्ठं'[1] यह तो है व्यवहार कथन।
है अबद्ध अस्पृष्ट कर्म से निश्चय नय का यही कथन।।
जीव-देह को एक बताना यह है नय व्यवहार अरे।
जीव देह तो पृथक्-पृथक् हैं निश्चय नय कह रहा अरे।।

1. जीव कर्मों को बाँधता है तथा स्पर्शित करता है। (समयसार, गाथा-141)

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

निश्चय नय का विषय छोड़ व्यवहार माँहि करते वर्तन।
उनको मोक्ष नहीं हो सकता और न ही सम्यग्दर्शन।।
'दोण्हविणयाण भणियं जाणई'[1] जो पक्षातिक्रांत होता।
चित्स्वरूप का अनुभव करता सकलकर्म मल को खोता।
ज्ञानी ज्ञानस्वरूप छोड़कर जब अज्ञान रूप होता।
तब अज्ञानी कहलाता है पुद्गल बन्ध रूप होता।।

1. दोनों ही नयों के कथन को मात्र जानता है। (समयसार, गाथा-143)

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

‘जह विस भुव भुज्जंतो वेज्जो’[1] मरण नहीं पा सकता है।
ज्ञानी पुद्गल कर्म उदय को भोगे बन्ध न करता है।।
मुनि अथवा गृहस्थ कोई भी मोक्षमार्ग है कभी नहीं।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित ही मोक्षमार्ग है सही-सही।।
मुनि अथवा गृहस्थ के लिंगों में जो ममता करता है।
मोक्षमार्ग तो बहुत दूर भव-अटवी में ही भ्रमता है।।

1. जिसप्रकार वैद्यपुरुष विष को भोगता हुआ भी (समयसार, गाथा-175)

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

प्रतिक्रमण प्रतिसरण आदि आठों प्रकार के हैं विषकुम्भ।
इनसे जो विपरीत वही हैं मोक्षमार्ग के अमृतकुम्भ।।
पुण्यभाव की भी तो इच्छा ज्ञानी कभी नहीं करता।
परभावों से अरति सदा है निज का ही कर्ता धर्ता।।
कोई कर्म किसी को भी सुख-दुख देने में नहीं समर्थ।
जीव स्वयं ही अपने सुख-दुख का निर्माता स्वयं समर्थ।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

क्रोध, मान, माया, लोभादिक नहीं जीव के किंचित् मात्र।
रूप, गंध, रस, स्पर्श शब्द भी नहीं जीव के किंचित् मात्र।।
देह संहनन संस्थान भी नहीं जीव के किंचित् मात्र।
राग-द्वेष-मोहादि भाव भी नहीं जीव के किंचित् मात्र।।
सर्वभाव से भिन्न त्रिकाली पूर्ण ज्ञानमय ज्ञायक मात्र।
नित्य, ध्रौव्य, चिद्रूप, निरंजन, दर्शनज्ञानमयी चिन्मात्र।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

वाग्जाल में जो उलझे वह कभी सुलझ ना पायेंगे।
निज अनुभव रसपान किये बिन नहीं मोक्ष वे पायेंगे।।
अनुभव ही तो शिवसमुद्र है अनुभव शाश्वतसुख का स्रोत।
अनुभव परमसत्य शिव सुन्दर अनुभव शिव से ओतप्रोत।।
निज स्वभाव के सन्मुख हो जा, पर से दृष्टि हटा नादान।
पूर्ण सिद्धपर्याय प्रकट कर आज अभी पा ले निर्वाण।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

ज्ञान-चेतना सिंधु स्वयं तू स्वयं अनन्तगुणों का भूप।
त्रिभुवनपति सर्वज्ञ ज्योतिमय चिंतामणि चेतन चिद्रूप।।
यह उपदेश श्रवण कर हे प्रभु ! मैत्री भाव हृदय धारूँ।
जो विपरीत वृत्तिवाले हैं उन पर मैं समता धारूँ।।
धीरे-धीरे पुण्य-पाप शुभ-अशुभ आस्रव संहारूँ।
भव-तन भोगों से विरक्त हो निजस्वभाव को स्वीकारूँ।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

दसधर्मों को पढ़ सुनकर अन्तर में आये परिवर्तन।
व्रत उपवास तपादिक द्वारा करूँ सदा ही निज चिंतन।।
राग-द्वेष अभिमान पाप हर काम क्रोध को चूर करूँ।
जो संकल्प-विकल्प उठे प्रभु उनको क्षण-क्षण दूर करूँ।।
अणुभर भी यदि राग रहेगा नहीं मोक्ष पद पाऊँगा।
तीन लोग में काल अनंता राग लिए भरमाऊँगा।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

राग शुभाशुभ के विनाश से वीतराग बन जाऊँगा।
शुद्धात्मानुभूति के द्वारा स्वयं सिद्ध पद पाऊँगा।।
पूर्यषण में दूषण त्यागूँ बाह्य क्रिया में रमे न मन।
शिवपथ का अनुसरण करूँ मैं बन के नाथ सिद्धनन्दन।।
जीव मात्र पर क्षमाभाव रख मैं व्यवहार धर्म पालूँ।
निज शुद्धातम पर करुणा कर निश्चय धर्म सहज पालूँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्माय अनर्घ्यपदप्राप्तये
जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

आशीर्वाद

मोक्ष–मार्ग दर्शा रहा, क्षमावाणी का पर्व।
क्षमाभाव धारण करो, राग–द्वेष हर सर्व।।

इत्याशीर्वादः

जाप्य मंत्र - ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्माङ्गाय नमः।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु